दक्षिण पूर्व रेलवे, खड़गपुर कारखाना

खड़गपुर कारखाना

दर्पण

संरक्षक

सीताराम सिंकू
मुख्य कार्य प्रबंधक

प्रधान संपादक

के0 पी0 अधिकारी
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
उप मुख्य बिजली इंजीनियर(कारखाना)

संपादक

तारकेश्वर शर्मा

सहायक संपादक

वेद प्रकाश मिश्र

तकनीकी संपादक

उदय कुमार मिश्र
सीनियर इंजीनियर(आई. टी.)

पत्राचार हेतु पता

संपादक
खड़गपुर कारखाना दर्पण
राजभाषा अनुभाग,
मुख्य कार्य प्रबंधक कार्यालय,
खड़गपुर कारखाना
पोस्ट : खड़गपुर-721301

विधुत लोको चल स्टाक -आवधिक मरम्मत शाप

खड़गपुर कारखाना के एक इकाई के रूप में विधुत लोको चल स्टाक-आवधिक मरम्मत शाप भारतीय रेल में एक महत्तवपूर्ण भूमिका का निष्पादन सन 1986 से करते आ रही है। इसके पूर्व इस शाप में भाप चालित इंजन के मरम्मत का कार्य होता था। शुरूआती दौर में 3 लोको की आवधिक मतम्मत की गई जो अब बढ़कर 5 लोको की आवधिक मरम्मत (पी.ओ.एच.) तक हो गई है। भारतीय रेल द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले WAM4, WAG5, WAG7, WAP4 इत्यादि लोको का इस शाप में मरम्मत किया जा रहा है। इन कार्यों के अलावे दुर्घटना ग्रस्त लोको के मरम्मत, री-केबलिंग, चालक सहायक कक्ष, केम्बर मरम्मत, रेल मानक संस्थान द्वारा समय-समय पर दिए गए संशोधन इत्यादि कार्यों को सफलतापूर्वक किया जा रहा है। एक रददीकरण के लिए प्रस्तावित दुर्घटना ग्रस्त लोको को ट्रेनिंग कार में तब्दील कर एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया है , जिसका उपयोग आज भी भिलाई लोको प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा चालकों के प्रशिक्षण हेतु किया जा रहा है। लोको में प्रयुक्त उपकरणों की त्रृटि-निवारण, विफलता और उत्तरोत्तर बेहतरी हेतु नए-नए परीक्षण-बेंच का निर्माण किया गया, जिससे लोको की विफलता को रोकने में मदद मिली है। रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित 23 दिन की आवधिक मरम्मत की अवधि को ध्यान में रखते हुए उत्पादन में लगातार वृद्धि हुई है। सुरक्षा की दृषिट से पिछले पांच वर्षों में कोई बड़ी दुर्घटना इस इकाई में नहीं हुई है और इस उपलबिध के लिए पिछले वर्ष मुख्य कार्य प्रबंधक द्वारा इस कर्मशाला को पुरस्कृत किया गया। कौन बनेगा करोड़पति की तर्ज पर एक सुरक्षा संबंधित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई गई तथा जीतने वाले प्रतियोगी को पुरस्कृत किया गया। खड़गपुर कारखाने में इस तरह का आयोजन प्रथम बार हुआ है।

राष्ट्रीय मानक संस्थान द्वारा प्रस्तावित कुछ उपकरण लोको की गुणत्ता की वृद्धि के लिए लगाए जा रहे हैं। इनमें प्रमुख हैं -विजिलेन्स कण्ट्रोल डिवाइस (CCD) माइक्रो प्रासेसर आधारित दोष जांच एवं नियंत्रण तकनीक (MFDCS) इत्यादि। इन उपकरणों के प्रयोग से लोको के दोष का पता लगाने और इनके निवारण में विशेष मदद मिली है। इस इकाई ने कंप्यूटर आधारित जांच-बेन्च का निर्माण कर लोको में लगाए जाने के पूर्व इलेकिट्रानिक-सुरक्षा उपकरणों की जांच का अद्वितीय कार्य किया है, जिसके फलस्वरूप आन-लाइन त्रुटियों में क्रमश: कमी आई है। क्रू-फ्रेंडली कक्ष द्वारा लोको-संचालक को विशेष सहूलियत प्रदान की जा रही है, जिससे वातानुकूलित कक्ष की योजना भी प्रमुख है। क्षय-रोधक पी.यू.पेन्ट के प्रयोग से लोको की सामान्य रूप और गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी हुई है।

व्यंग्य

टोपियों की नूरा कुश्तियाँ

आजकल राजनीति में टोपियों का बाजार बड़ा गर्म है। कहीं लाल टोपी और सफेद टोपी की तो कहीं केसरिया और नीली टोपी की नूरा कश्तियाँ जारी है। किसी ने आप की ही टोपी पहन ली तो वहीं किसी ने बाप की भी टोपी हथिया रखी है।

वैसे तो राजनीति में चुनाव का पर्याय ही जनता के द्वारा इसकी टोपी उसके सर करना होता है। वहीं पार्टियाँ नएनए तरीकों की घोषणाओं और वादों से मतदाताओं को टोपी पहनाने में लगी होती हैं। तभी तो -भा में वहीं की टोपी पहनने को शुभ कार्य संपन्न करते नेता जिस प्रदेश में प्रचार करने जाते हैं सबसे पहले स हैंं।

कहीं एक नेता ने धर्मनिरपेक्ष वाली टोपी नहीं स्वीकारी तो मीडिया में ही विश्व युद्ध छिड़ गया। दूसरे नेता ने फौरन पेश्तर व्यंग्य में ही व्यवसायिक सलाह भी दे डाली , मुफ्त में की भाई राजनीति का मतलब ही कहीं कहीं टोपी पहनना और कहीं तिलक लगा लेना है।-

एक नए नेता जिनके आंधी के डर से कई जड़ जमा के बैठे धुरंधर अपनी टोपियों को मजबूती से पकड़ बैठे हैं। वो तो टोपी कला में विशेषज्ञता रखते हैं। तभी तो हर चार महीने में टोपी के नीचे का बंदा वही रहता है, पर टोपी की इबारत बदल जाती है। अन्ना से शुरूआत आम आदमी का साथ जनलोकपाल की बात और आजकल स्वराज की छाप। इनका टोपखाना जरूर देखने योग्य होगा।

वैसे टिकटमास में टोपियाँ बदलने का रिवाज भी लोकतंत्र जितना पुराना मालूम होता है। तभी तो -लड़ने में ही शुभ मानते हैं। कुछ नेता तो शायद उंगलिय कुछ नेता हर चुनाव नयी टोपी सेों पर गिन भी न पाएं कि कब कहां किसकी पहनी और कब किसको पहनायी थी।

सारे द्वन्द्व युद्ध, वाक युद्ध , कटाक्ष, कटूक्ति, वक्रोक्ति, अन्योक्ति, आदि और आ जा देख लेता हूं तक सीमित रह जाते हैं।बन्द कमरों तक नहीं पहुंचते। वहा सड़कों और सभाओं में ही होते हैं और वहीं...ं सिर्फ आपसी प्रेम ही व्याप्त होता है। क्योंकि कौन जाने कब टापियां बदल जाएं और सबसे बड़ी टोपी किसके पास आ जाए। टोपी की ताकत तो देखिए जिसके सर सरकारी टोपी आ जाए यानी ताज आ जाए तो बाकी सारी टोपियां भी नटोतपियां हो जाती हैं-, क्योंकि सर सलामत तो टोपी हजार।

वैसे बेचारे करे भी तो क्या सारा लफड़ा ही तो टोपी यानी ताज का जो है। तभी तो हर नेता को हर धर्म, जाति और हर मौके के लिए सर्वाधिक टोपियों का जखीरा हमेशा साथ रखना पड ़ता है, भले ही दवाइयों वाला घर पे भूल आए। अमेरिका हो या हिन्दुस्तान, हर चुनाव के पहले एक परिवर्तन की आंधी चलती है या मीडिया के सही उपयोग से चलाई जाती है। बेचारी भोली जनता हर बार मान बैठती है कि इस बार तो गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, सड़क, बिजली, अन्याय, आतंक आदि इन सबसे थोक में तो निपटारा हो ही गया

समझो। पर चुनाव के साल, छह महीने बाद कुछ वाकई बदलता पाया जाता है तो है सत्ताधारी टोपी का रंग और इबारत।

खैर, टोपियाँ तो बदलती भी रहेंगी और उछलती भी रहेंगी लेकिन आप श्रीमान इस चुनाव में दिल से नहीं दिमाग से वोट दें। सोच समझ कर वरना कोई गलत आदमी फिर से टोपी पहना जाएगा, वो भी पांच साल के लिए।

सुरेश प्रकाश शुक्ल की ग़ज़ल

आजकल डरने लगा हूँ देखकर अख़बार भी,
चरम पर अपराध, दहशत और हाहाकार भी।

ये शहर की भीड़ सड़कों में समाती ही नहीं,
हर कहीं गिरने गिराने, मौत के आसार भी।

घुल गया है खून में जब से मिलावट का जहर,
खल रही बीमारियों की लटकती तलवार भी।

पिस रहे कमजोर दुर्बल ज़िन्दगी के पाट में,
देख सुन सब कुछ करें क्यों अनसुनी दातार भी।

सोचता हूँ रोज सुन पाऊँ, पढ़ूँ, देखूँ भला,
हो नहीं दंगा कहीं पर, हों न जन लाचार भी।

आजकल लगने लगी है बुलबुलेसी ज़िन्दगी-,
चैनसुख से सांस लेना हो रहा दुश्वार भी।-

आस थी जिनसे लगाई शुकुल ने सुखचैन की-,
आँख वे मूँदे रहे क्यों हर दफ़ा इस बार भी।

पर्क प्राची प्रतिभा : संपादक : (हिंदी मासिक)
सरस्वती 93 पवनपुरी, लेन 9, आलमबाग, लखनऊ-226005,
मोबाइल नंबर-9452741071

तारकेश्वर शर्मा विकास की तीन ग़ज़लें

।।एक।।

(बहर (फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन :

गाँव में भी रहा, शहर में भी रहा
गाँव अपना लगा, शहर सपना लगा

जब रहा गाँव में तब बुरा हाल था
फिर भी ख़ुशहाल था क्योंकि सम्मान था

संग जिसके रहा, संग जिसके जिया
संग प्यारा लगा, संग न्यारा लगा

मैं जहाँ भी रहा नित नया ही किया
गीतनवगीत रच गुनगुनाता रहा-

जब से गाने लगा मैं ग़ज़लगीत खूब-
सप्तसुर को सदा- साधता ही रहा

कुछ तो करना ही था ताकि कुछ तो मिले
शुक्र है गायकी से सहारा मिला

मंच पर जब चढ़ा लोग तकने लगे
कुछ तो कहने लगे ये तो तारीक मियाँ

क्या सरल काम है सबको खुश कर ही दूँ
पर सुनाया किया दर्द अपना जिया

मैं सुमन तो न था, पर चढ़ा शीश पर
देव श्रोता रहे मैं सुमनवत रहा

आचरणखव्याकरण मैं सदा ठीक र-
राम बनके रहा, श्याम बनके रहा

ज़िन्दगी तो जीने की कला एक है
जो सँभलकर जिया उसने सबकुछ किया

रात हो, दिन हो या हो दोपहर
माघ में, जेठ में मस्त रहके जिया

।।दो।।

(बहर (मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन :

बहुत जब थक चुके हैं तो चलो आराम ही कर लें,
बहुत प्यारी जगह है यह यहीं पर रात ही कर लें।

बुजुर्गों की दुआ से हम सदा बचते चले आए,
परिन्दे की जहां जैसी जहाँ हम प्यार ही कर लें।

बजाते ढोल भी हैं हम, बजाते गाल भी हम ही,
उड़ाकर मालनुकसान ही कर लें।-नी हम नफ़ापा-

नज़र लगना नहीं कुछ भी, नज़रवालो खबर ! रखना,
तनीं भौंहें बताती हैं कि हम इसरार ही कर लें।

नहीं आकण्ठ हम डूबे, नहीं उबरे जमाने से,
रज़ामन्दी अगर है तो ग़ज़ल से बात ही कर लें।

कभी तो शाइरी घर में कदम अपना बढ़ाएगी,
हवाले काफिये को कर उसी का साथ ही कर लें।

छंटे हम भी खिलाड़ी हैं, चले आये कमर बांधे,
समर में जीत ही कर लें, नहीं तो हार ही कर लें।

हमें कोई बताये मत कि चलती है ग़ज़ल कैसी,
चलेगीे रुक़्न पर ही तो सही इमकान ही कर लें।

खुराकी मिल रही है बस खुदादरबार से हमको-,
हवाले कर खुशीग़म ये सुबहोशाम ही कर लें।-

।।तीन।।

(बहर (फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन :

हाय किसकी लग गई सुनती ग़ज़ल
हर जगह मिलती रही धमकी ग़ज़ल

क्या करूँ, क्या ना करूँ, तू ही बता
काश थ में रहती ग़ज़लतू ही सा !

बेवजह डरती रही हो इस कदर
आ इधर अपनी ग़ज़ल सनकी ग़ज़ल

देख लो, किसकी कहाँ चलती नज़र
हर नज़र पर ध्यान रख नकदी ग़ज़ल

कातिलानासी नज़र से डर लगे-
हायरी व-ज़्नी ग़ज़ल चिकनी ग़ज़ल

रुक्न पर चलती रही हो हर बहर
काफ़िये संग रह ग़ज़ल समझी ग़ज़ल

दिलरुबा हो, कहरुबा हो, हो कहन
आ गले लग जा ग़ज़ल, पगली ग़ज़ल

क्या हिफ़ाजत चाहिये हम को बता
वाहरी-, सनसी ग़ज़ल-, दिल की ग़ज़ल

तू नहीं तो कुछ नहीं मेरे लिए
गांठ मत पड़ना कभी तिरनी ग़ज़ल

आशिकी पर आजमाइश क्यों करूँ ?
राम जैसा हूँ नहीं मिसरी ग़ज़ल

तू कमल की पाँखुड़ी, तू धन्य हो
विष्णु की मनभावनी खिलती ग़ज़ल

वर्तनी में हो गई गर चूक तो
अटपटाती अर्थ से बिगड़ी ग़ज़ल

शाश्वत बहती हुई, भागीरथी
मीर की थी दरख़्शां अपनी ग़ज़ल

लुफ़्तक्या ग़ज़ल साकी ग़ज़ल भी-ए-
सरखुशी जिससे मिले असली ग़ज़ल

काश तू घुलती ग़ज़ल हर सांस में !
ज़िन्दगी भर हमसफर चलती ग़ज़ल

@@@@@@

आलेख

बम्बइया सिनेमा के विकास विस्तार में हिन्दी की भूमिका

- **मनीष चंद्र झा, वरिष्ठ लिपिक, डीजल कर्मशाला खड़गपुर कारखाना**

हिन्दी भाषा के उदभव का इतिहास : ईसा की नौवीं-दसवीं शताब्दी से हिन्दी, जहाँ भाषा के रूप में विकसित हो रही थी, वहीं दूसरी ओर राजकाज में प्रचलित थी। राजपूतों के पराजय के पश्चात विदेशी आक्रमणकारियों का भारत पर आधिपत्य हो गया, लेकिन हिन्दी के महत्त्व में कोई कमी नहीं आई। गजनवी से लेकर खिलजी तक, तुगलकवंश और मुगलकाल में हिन्दी राजकाज की भाषा के रूप में प्रतिषिठत थी। हालांकि इन बादशाहों की भाषा अरबी-फारसी थी, लेकिन जनता से संपर्क स्थापित करने तथा प्रशासकीय कार्यों में हिन्दी का प्रचलन था। मराठा काल में प्रशासन का कार्य हिन्दी भाषा में होता था। राजस्थान की विभिन्न रियासतों के मध्य पत्राचार का माध्यम हिन्दी भाषा ही थी।

स्वतंत्रता संग्राम के समय से यह महसूस किया गया कि देश के विभिन्न भाषा-भाषा के बीच संपर्क स्थापित करने में हिन्दी ही सरल एवं समर्थ भाषा है। यह उल्लेखनीय है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव दिलाने में इतर हिंदी भाषी क्षेत्र के चिन्तक और देश प्रेमी ही अग्रण्य हैं। इनमें बंगाल से केशव चंदसेन, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक, गुजरात के दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी आदि उल्लेखनीय हैं।

14 जुलाई 1947 को संशोधित रूप में हिन्दुस्तानी के स्थान पर हिन्दी समिमलित कर लिया गया। 14 सितम्बर 1949 को संविधान के अनुच्छेद 341(1) के अंतर्गत संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी को अपनाया गया।

बम्बइया सिनेमा का उदभव : भारत में सिनेमा के विकास में धुन्दराज गोवंद फाल्के या दादा साहब फाल्के का योगदान महत्त्वपूर्ण है। महत्त्वपूर्ण योगदान देने के कारण ही उन्हें भारतीय सिनेमा का जनक कहा जाता है। पहली बोलने वाली फ़िल्म आलम आरा एवं पहली रंगीन फ़िल्म किशन कन्या बनाने का श्रेय निर्देशक अर्देशी ईरानी को जाता है।

भारत को स्वतंत्रता मिलने के पहले लगभग हजारों फ़िल्में बन चुकी थी। सन 1940 से सन 1960 के युग को भारतीय सिनेमा का स्वर्णकाल माना जाता है। इस काल में राजकपूर, गुरुदत्त, महबूब साहब जैसे दिग्गज फ़िल्मकारों का उदभव हुआ। मदर इंडिया, प्यासा, कागज के फूल, आवारा, श्री 420 आदि उस दौर की कुछ सर्वश्रेष्ठ फ़िल्में थीं, जो आज भी मील का पत्थर साबित हुईं। देवानंद, दिलीप कुमार, मधुबाला, बैजयंतीमाला, राजकपूर, मीना कुमारी आदि कलाकारों ने हिन्दी सिनेमा को नये आयाम प्रदान किए। तब से अब तक हिन्दी सिनेमा ने सौ वर्ष पूरे कर लिए। इन सौ वर्षों में हिन्दी सिनेमा अनेक ऊँचाइयों को छू लिया। आजकल बम्बइया सिनेमा उधोग को हालीवुड की तर्ज पर बालीवुड कहा जाने लगा है। बम्बइया सिनेमा के विस्तार में हिन्दी का योगदान महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हिन्दी और बम्बइया सिनेमा एक दूसरे के पूरक हैं। बम्बइया सिनेमा के विस्तार में हिन्दी की भूमिका निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है :

(क) हिन्दी जनसंपर्क भाषा होना : स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही हिन्दी को जनसंपर्क भाषा माना गया। इस कारण हिन्दी भाषा को फ़िल्मों को माध्यम बनाया गया। हिन्दी भाषा सरल होने के साथ ही लोगों को आसानी से समझ में आ जाती थी।

(ख) देश के बड़े भू-भाग में बोली जानेवाली भाषा : हिन्दी देश के बड़े भू-भाग में बोली जाती है। फ़िल्मकारों ने हिन्दी दर्शकों को ध्यान में रखकर फ़िल्में बनाईं ताकि फ़िल्मों के लिएएक विस्तृत बाजार प्राप्त हो और अधिक से अधिक व्यवसायिक लाभ प्राप्त किया जा सके।

(ग) फ़िल्मकारों का हिन्दी पृष्ठभूमि से संबंध : राजकपूर, गुरुदत्त जैसे फ़िल्मकारों का संबंध हिन्दी पृष्ठभूमि से था। इस कारण हिन्दी दर्शकों को ध्यान में रखकर हिन्दी भाषा में फ़िल्में बनाई गईं।

(घ) हिन्दी भाषी लोगों का रोजगार की तलाश में पलायन : हिन्दी भाषी राज्यों में रोजगार के अवसर नहीं मिलने के कारण अनेक हिन्दी भाषी अपने राज्यों को छोड़कर अन्य राज्यों की ओर रोजगार की तलाश में पलायन करने लगे। यहाँ तक कि विदेशों में भी पलायन को मजबूर हुए। मालद्वीव, इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा तथा त्रिनिदाद एवं टोबैगो में हिन्दी भाषी जमातों का मिलना इसका ज्वलंत उदाहरण है।

इन हिन्दी भाषियों के मनोरंजन का एकमात्र साधन हिन्दी सिनेमा ही थी। अन्य राज्यों तथा देश-विदेश में बसे हिन्दी भाषियों ने हिन्दी के विस्तार में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

(ङ) टेलीविजन क्षेत्र में क्रांति : : टेलीविजन के क्षेत्र में आई क्रांति से नए निजी चैनलों की बाढ़ आ गई। सिनेमा ज्यादा सुलभ हो गया। लोगों के घरों में हिन्दी सिनेमा घुस आया। इसके अलावा हिन्दी धारावाहिकों को अन्य क्षेत्रीय भाषा भाषी भी देखने लगे।हिन्दी की जनप्रियता के माध्यम पर सवार होकर बहुत सारे कलाकार, सर्वभारतीय पहचान बना सके।

(च) केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड के माध्यम से हिन्दी को पढ़ाया जाना : केन्द्रीय विधालयों के पाठयक्रम में हिन्दी एक अनिवार्य विषय होने के कारण हिन्दीतर भाषी लोगों की नई पीढ़ी इस भाषा से परिचित हुई। बड़े लोगों को भी बच्चों की खातिर हिन्दी सीखना पड़ा। उनकी यह रुचि उन्हें हिन्दी सिने जगत की ओर खींच लाई और हिन्दी सिनेमा उनके मनोरंजन का साधन बन गई।

(छ) अन्य भाषा की फ़िल्मों का हिन्दी में डब किया जाना : बहुत सारी प्रादेशिक भाषा में बनने वाली फ़िल्में हिन्दी भाषा में डब करके हिन्दी दर्शकों को परोसी जाती है ताकि अधिक से अधिक पैसा बनाया जा सके।

(ज) हिंगिलश भाषा का उदय : आजकल हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के समिमश्रण से एक नई भाषा हिंगिलश का प्रयोग हिन्दी भाषी फ़िल्मों में धड़ल्ले से हो रहा है। इसके कारण यह भाषा और सरल हो गई और दर्शक हिन्दी सिनेमा की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

उपसंहार : सौ वर्षों के इतिहास में हिन्दीसिनेमा ने अनेकों उल्लेखनीय कार्य किए एवं अनेकों कलाकारों, संगीतकारों एवं गीतकारों को जन्म दिया। हिन्दी फ़िल्में जितनी अधिक सफल हुई उतनी सफलता प्रादेशिक भाषा में बनने वाली फिल्मों को नहीं प्राप्त हुई। आज भी तेलुगु, तामिल, बंगला आदि फिल्मों में कार्य कर चुके अभिनेता हिन्दी फिल्मों में कार्य करने को लालायित रहते हैं, ताकि अधिक से अधिक प्रसिद्ध पा सकें। कई विदेशी सुन्दरियाँ हिन्दी फिल्मों में कार्य करने हेतु बम्बइया फिल्म उधो या बालीवुड की ओर रुख कर

रही हैं। साथ ही साथ हिन्दी भी सीख रही हैं ताकि हिन्दी फिल्मों में कार्य करने का मौका मिले। अनेक विदेशी सुन्दरियाँ हिन्दी गानों पा नृत्य करती हुईं फिल्मों में दिखाई दे रही हैं।

हिन्दी सिनेमा ने अपने देश की सीमा को तोड़कर विदेशों में भी सफलता का परचम लहराया है। इस तरह हम कह सकते हैं कि हिन्दी सिनेमा के विस्तार में हिन्दी भाषा का योगदान महत्त्वपूर्ण है। आजकल हिन्दी फिल्में सौ करोड़ से अधिक की कमाई कर रही हैं। यह व्यवसासिक सफलता भी हिन्दी भाषा के कारण संभव हो पाई है। यह कहना गलत नहीं होगा कि बम्बइया सिनेमा के लिए आक्सीजन का काम हिन्दी भाषा ने किया है।

@@@@@@

यूनिकोड

यूनिकोड पूरे विश्व में वर्णोंलेखन प्रणालियों को पूर्णांक के रूप में व्यक्त करने का एक मानक है। प्रत्येक कैरेक्टर के लिए 7 बिट का प्रयोग करने वाले ASCII से अलग इसमें 16 बिट का प्रयोग होता है। आज यूनिकोड में लगभग 100 लिपियों के 1,10,000 से अधिक अक्षरों को व्यक्त किया जा रहा है अत: अंग्रेजी तथा पशिचम यूरोपीय भाषाओं के साथ-साथ यूनानी, चीनी, जापानी तथा अन्य दक्षिण एशियाई भाषाओं का समावेश करते हुए अंतत: यूनिकोड मानक प्रारूप कोडिंग के जरिये ASCII की जगह ले रही है। कंप्यूटर और साफ्टवेयर के अंतर्राष्ट्रीयकरण तथा स्थानीकरण के लिए एकीकृत वर्णों का यूनिकोड के रूप में व्यापक और सर्वाधिक प्रयोग हो रहा है। इस मानक को वर्तमान प्रौधोगिकी जैसे एक्स.एम.एल. जावा भाषा प्रोग्रामिंग, माइक्रोसाफ्ट नेट फ्रेमवर्क तथा अन्य आधुनिक आपरेटिंग सिस्टम में सफलतापूर्वक लागू किया गया है। अत: हम कह सकते हैं कि यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नम्बर प्रदान करता है, चाहे कोई भी प्लेटफार्म हो, चाहे कोई भी प्रोग्राम हो, चाहे कोई भी भाषा हो।

यूनिकोड एविटवेट करने के लिए की न्यूनतम आवश्यकताएँ :

क. विन्डोज 2000 या उच्चतर आपरेटिंग सिस्टम या
ख. एम.एस. आफिस एक्स.पी. या उच्चतर वर्जन

यूनिकोड एविटवेट करने के लिए सेटिंग :

क. विन्डोज 2000 के लिए : स्टार्ट > सेटिंग्स > कंट्रोल पैनल > रीजनल आप्शन्स > लेंग्वेज सेटिंग फार दी सिस्टम में इंडिक को टिक करें। फाइल कापी होना शुरू हो जाए (यदि आवश्यक हो तो कंप्यूटर को विन्डोज 2000 की सी.डी. उपलब्ध कराएं) फाइल कापी हो जाने के बाद कंप्यूटर को री-स्टार्ट करें।

ख. विन्डोज एक्स.पी. के लिए : स्टार्ट > कंट्रोल पैनल > रीजनल एण्ड लेंग्वेजेस सपोर्ट में राइट टु लेफ्ट लेंग्वेज को टिक करें। फाइल कापी होना शुरू हो जाएगा (यदि आवश्यक हो तो कंप्यूटर को विन्डोज एक्स.पी. की सी.डी. उपलब्ध कराएं)। फाइल कापी हो जाने के बाद कंप्यूटर को री-स्टार्ट करें।

ग. विन्डोज विस्टा के लिए : स्टार्ट > कंट्रोल पैनल > लेंग्वेज एंड रीजनल> रीजनल एंड लेंग्वेज आपशन्स की-बोर्ड एंड लेंग्वेज चेंज की-बोर्ड एड हिंदी भाषा और की-बोर्ड चुनें फिर ओके करें।

हिंदी इंडिक आईएमई की-बोर्ड : यह की-बोर्ड ड्राइवर **www.bhashaindia.com** पर उपलब्ध है। इसे फ्लापी, सीडी आदि माध्यमों से भी डाउनलोड करके इन्स्टाल किया जा सकता है। इंरनेट या सीडी से कंप्यूटर पर डाउनलोड करने के बाद उसे रन करें और उसके बाद इस की-बोर्ड को एकिवेट करने के लिए निम्न प्रकार सेटिंग करें।

विन्डोज 2000 के लिए सेटिंग्स : स्टार्ट, कंट्रोल पैनल, सेटिंग्स, रीजनल आपशन्स, इनपुट लोकल, चेंज, इनपुट लेंग्वेज एड करें तथा इंडिक आईएमई में टिक करने के बाद ओ.के. करें।

विन्डोज एक्स.पी. के लिए सेंिग : स्टार्ट, कंट्रोल पैनल, रीजनल एण्ड लेंग्वेज आपशन्स, लेंग्वेज, डीटेल्स, एड, इनपुट लेंग्वेजेस, हिंदी की-बोर्ड ले आउट पर टिक लगाएं आलर ड्रापडाउन सूची में से इंडिक आईएमई को चुनें फिर ओके करके कंप्यूटर को री-स्टार्ट करें।

विन्डोज विस्टा के लिए सेटिंग : स्टार्ट, कंट्रोल पैनल, लेंग्वेज एंड रीजन, रीजनल एण्ड लेंग्वेज आपशन्स, की-बोर्ड एंड लेंग्वेजेस, चेंज की-बोर्ड एंड हिंदी(इंडिया), हिंदी इंडिक आईएमई की-बोर्ड चुनें फिर ओके करें।

यूनिकोड में टाइपिंग : पहले नया वर्ड डाक्यूमेंट खोलें। स्क्रीन के बाटम में दायीं ओर EN(English) चिहन होगा, उस पर किलक करके HI(Hindi) को चुनें। (HI) को चुनते ही की-बोर्ड ड्राइवर क्रियानिवत हो जाएगा। टाइपराइटर के चित्र पर किलक करके अपनी सुविधानुसार की-बोर्ड का चयन करें। मंगल फान्ट में हिंदी टाइपिंग शुरू करें। अंग्रेजी में टाइप करना हो तो बाटम में (HI) पर किलक करें और EN को चुनें या टोगल-की Alt और Shift को एक बार दबाएं। पुन: हिंदी में टाइप करने के लिए वही पद्धति अपनाएं। इसके अलावा आप EN/HI किलक करके भी भाषा चुन सकते हैं।

हिंदी इंडिक आईएमई में तीन प्रकार के की-बोर्ड लेआउट उपलब्ध हैं :- फोनेटिक(ट्रांसलिटरेशन), इन्सक्रिप्ट और हिंदी टाइपराइटर(गोदरेज, रेंिगटन आदि)

यूनिकोड फान्ट के लाभ :

- टेबल आदि में डाटा संसाधन किया जा सकता है।
- फाइलों आदि के नाम हिंदी में दिए जा सकते हैं।
- किसी भी स्थान पर हिंदी में ई-मेल भेजे जा सकते हैं।
- हिंदी वेबसाइट में इनका उपयोग किया जा सकता है।
- हिंदी में टेम्पलेट आसानी से बनाए जा सकते हैं।

(वेब पेजों से संकलित)

राष्ट्र के निर्माण में नारियों का योगदान

- बन्या चौधरी, तकनीशियन।।-, डीजल कर्मशाला खड़गपुर कारखाना

हम सब जानते हैं कि भारतवर्ष पुरुषतांत्रिक देश है। फिर भी, हम सबको मानना पड़ेगा कि प्राचीन काल से हर विषय में जैसे राजनीति, अर्थनीति, सामाजिक क्षेत्र में नारियों की भूमिका अपरिसीम रही है। पौराणिक काल से ही इस देश हर क्षेत्र में नारियों की उपसिथति इतिहास के पन्नों में दर्ज है। गर हम वैदिक युग में देखें तो वहाँ हमें गार्गी, मैत्रयी, लोपामुद्रा, वसुंधरा जैसी महिलाएं मिलेंगी जिनकी उपसिथति इतिहास के पन्ने में एक उज्ज्वल अध्याय के रूप में रही है। व्याकरण रचना से लेकर यहाँ तक हर विषय में हमारे देश की नारियाँ हमेशा आगे रही हैं। यहाँ तक कि गौतम बुद्ध की कामयाबी में भी सुजाता जैसी नारी ही रही है। बौद्ध शिक्षा व्यवस्था में भी क्षेमा, सुमेधा जैसी नारियों का नामागे आया है। आज भी इन नारियों का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है।

पुराण में भी हमने गांधारी, कुन्ती, द्रौपदी जैसी नारियों को राष्ट्र के राजनैतिक पृष्टभूमि में आते हुए देखा है। सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में इन नारियों की उपसिथति एक नई दिशा की सूचना थी। इसके बाद अगर हम इसलामिक युग में देखें तो हमें नज़ार में आएगा कि पर्दानशी होते हुए भी अंदरमहल से नारियों का उज्ज्वल तथा महत्त्वपूर्ण योगदान इतिहास के पन्ने से आंदोलित किया है। सुलताना रजिया की सुदक्ष शासन व्यवस्था शायद इसलामिक शासन व्यवस्था का सबसे उल्लेखनीय अध्याय है। जहांगीर की सु-शासन व्यवस्था के पीछे नूरजहां का वदान या शाहजहां के ताजमहल निर्माण के पीछे मुमताज की निशब्द : उपसिथति तथा राजनैतिक प्रेक्षापट में जहांनारा बेगम का योगदान आज भी इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज है। महामना अकबर को भी बारंबार पराजित होन स्वाधनचेता ताराबाई या चांद सुलताना के सामनेा पड़ा। राजपूत नारियों की वीरता सम्मानजनक समाज का दर्पण है। रानी लक्ष्मीबाई के साथ ही सारे भारतवासियों को एक स्वाधीन अंगरेजी शासन रहित देश का सपना देखने का अवसर मिला। 200 साल के अंगरेजी शासन व्यवस्था के खिलाफ़ पुरुषों के साथ कदम मिलाते हुए नारियों का योगदान भी कुछ कम नहीं है। शायद कम संख्या में ही सही परन्तु कभीकभीतो नारियों ने अपने पुरुष साथियों से भी ज्यादा कीर्ति का परिचय दिया - है।

आज के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक या शिल्प संस्कृति के क्षेत्र में नारियों के योगदान सर्वविदित हैं। वाणिजियक या सरकारी उच्च पदों में भी आज नारियाँ महिमामंडित हैं। हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारे देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, किसी दल के अध्यक्ष, मुख्यमंत्री आदि के पदों पर भी भारत की नारियाँ समयत होती रही हैं और हो भी रही हैं। इनसमय पर सुशोभि-में श्रीमती प्रतिभा पाटिल, सुषमा स्वराज, सोनिया गांधी, मीरा कुमार, जयललिता, ममता बैनर्जी, मायावती आदि के नाम हम फक्र के साथ ले सकते हैं। केवल राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु विज्ञान, साहित्य, आइएएस, आइपीएस आदि क्षेत्रों में भी आज विदुषियों की कमी नहीं। क्या नेत्री, क्या अभिनेत्री, क्या साहित्यकार, क्या पत्रकार, हम यूँ कहें कि हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों से उन्नीस साबित नहीं हो रही हैं। पर्यावरण आन्दोलन से लेकर समाजसेवी संगठनों में भी आज की नारियाँ बड़े जोशोखरोश के साथ आगे आ रही हैं। चाहे मेधा पाटेकर हों, चाहे किरण बेदी। चाहे राखी बिरला हों, चाहे कोई और, यूं कहें कि आज की नारियाँ विकास के मेरूदंड हैं। मेनका गांधी

को ही ले तो क्या प्राणियों के रक्षार्थ अब तक कोई महिला सामने आई हैं। अब तक जिन लोगों को नोबल पुरस्कार मिला है, उनमें मदर टेरेसा, एलिस मुनरो आदि के योगदान को हम भला कैसे भुला सकते हैं। मदर टेरेसा जिनके कोमल स्नेह के स्पर्श से न जाने कितने अनाथ शिशुओं को रहने का ठौर मिला, जीवन मिला। एक वैज्ञानिक की हैसियत से अंतरिक्ष में भी जाने का मौका साइना विलियम्स, कल्पना चावला आदि जैसी नारियों को मिला। ओलंपिक का मैदान मारने वाली महिलाओं की भी कमी नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में भी सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल आदि जैसी महिलाओं ने अपना बखूबी परिचय दिया है। साहित्य के क्षेत्र में तो महिलाओं ने अपनी लेखनी के बदौलत जो परिचय दिया है उसकी भूरिभूरि प्रशंसा चहुंओर हुई हैं। इनमें महादेवी वर्मा, आशापूर्णा देवी, महाश्वेता देवी, आदि जैसी कथाकारा अपने देश में हुई हैं और मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, प्रतिभा राय, ममता कालिया आदि जैसी कथाकारा नित साहित्य को समृद्ध कर रही हैं।

आज हमारा देश जिस आर्थिक राजनैतिक संकटों से गुजर रहा है और इन संकटों से उबरने के लिए- जिस तरह से चुनौतियों का सामना करने में महिलाएं आगे आ रही हैं, यह कम बड़ी बात नहीं है।
आज की महिलाएं अपने सुदृढ़ नेतृत्व से देश को आगे ले जाने में अपनी भूमिका का परिचय दे रही हैं, काबिलेतारीफ़, काबिलेबहस और काबिलेगौर है। स्वामी विवेकानंद की एक बात -

एक पंख लेकर पंछी उड़ नहीं सकता। ऐसे में समाज या राष्ट्र विकल हो सकता है यदि नारियों का साथ न रहा तो नारी ही है पुरुष के हर कर्म की सहायिका। !

@@@@@@

व्यंग्य

नशा मुकित आंदोलन व जनजागरण अभियान-

: श्याम सुन्दर गुप्ता, एस0एस0ई0 (नक्शानवीस)

नशा के विभिन्न प्रकार हैं जैसे गुटका -, शराब, चरस, हेरोइन आदि। हमारे देश में लोग नशा शौकिया तौर पर शुरू करते हैं। फिर धीरेधीरे नशे के आदी हो जाते हैं। आदी होने के पश्चात नशे के लिए लोग अन्य बुरे - कार्य प्रारंभ करते हैं। आज नशे के लिए लोग हत्या भी कर देते हैं। नशे के कारण कितने ही परिवार बरबाद हो चुके हैं।

इस से मुकित के लिए अनेक सामाजिक संगठन ने अनेकानेक कदम उठाए हैं। इसी सिलसिले में हम एक कदम उठाना चाहता हैं और आप सबको चि0 गुटका राम एवं कुमारी बीड़ी बाई की शादी में आमंत्रित करते हैं।

नशा मुकित आंदोलन व जनजागरण अभियान-
सदा भवानी दायिनी, सामने दारूप्लटे।-
तीन देव रक्षा करें, गांजा, अफीम, सिगरेट।।

परमपिता गंजेड़ी राम की बुरी दृषिट की कृपा से श्रीमती एवं श्री गंजेड़ीराम जी अपने सुपुत्र की शादी में आप सबको निमंत्रित करते हैं।

चि0 गुटका राम
कुपुत्र श्री कैंसर प्रसाद जी
शराबी गली, कष्टनगर कालोनी
नरकपुर, पातालगंज

सौ0 कुमारी बीड़ी बाई
कुपुत्री श्री दमा सिंह
अफीमगली, दारूद्वारा के पास
फ्लैट नं0 420, गांजाप्रदेश

अमंगल विवाह

बड़े दु:ख के साथ आप सभी को सादर आमंत्रित किया जाता है। कृपया पधारकर वर-वधू को आशिर्वचन दें और नशाखोर परिवार को अनुग्रहीत करें।

वैवाहिक कार्यक्रम

बारात प्रस्थान	निशिचत
बारात स्वागत एवं विश्राम स्थल	श्मशान घाट के फैले मैदान में
विवाह मंडप	अर्थी पर
प्रीति भोज	तेरहवें दिन

आमंत्रण स्थल :-

श्री कैंसर प्रसाद जी के पुत्रश्री गंजेड़ीराम, शराबी गली, कष्टनगर, जिला-नरकलोक, पिन : 000000420

ननिहाल पक्ष
अंग्रेजी, देशी, महुआ एवं समस्त शराब निर्माता परिवार

विशेष आग्रह
गुटका देवी

आकांक्षी

दादा सिगरेटमल, दादी अफीमीबाई, चाचा चरस राम, चाची हेरोइन बाई एवं परिवार

दर्शनाभिलाषी

टी0बी0राम, खांसी राम, पायरिया, ताऊ हुक्का राम, नपुंषक राम, कमजोर राम एवं समस्त गंजेड़ी रोगी परिवार

हमारे ताता की शादी में दलूल आना -- गोवा, राजा खैनी, सफल, दबंग।

नोट :- बारात कैंसर प्रसाद, शराबी गली, कष्टनगर वालों के यहां से चार कंधों पर होकर जाएगी, जिसमें भजन भी होगा और राम नाम सत्य है के नारा से पूरा वातावरण गुंजयमान होगा।

@@@@@@

केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, खड़गपुर कारखाना की 99 वीं बैठक का आयोजन

दिनांक 27.12.2013 को केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्यवन समिति, खड़गपुर कारखाना की 99 वीं बैठक श्री साताराम सिंकू, मुख्य कार्य प्रबंधक की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में कारखाने के समस्त शाखा के सदस्यों, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिवों का स्वागत किया श्री के.पी. अधिकारी, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप मुख्य बिजली इंजीनियर(कारखाना) ने। श्री तारकेश्वर शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक ने अध्यक्ष महोदय से मुख्य बिन्दुओं पर निर्देश एवं मार्गदर्शन का अनुरोध किया। पिछली तिमाही के कार्यवृत्त की मदवार पुषिट के साथ कार्यसूची पर चर्चा हुई तथा अध्यक्ष, केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्यवन समिति व मुख्य कार्य प्रबंधक की अनुमति से निम्नलिखित प्रमुख निर्णय लिए गए :-

1.) धारा 3(3) के कागजातों की सूची का सूचना पटट अपने विभाग के प्रमुख स्थानों पर लगाएं।

2.) खड़गपुर कारखाने की ई-पत्रिका खड़गपुर कारखाना दर्पण के लिए रचनाएं हर माह की पन्द्रह तारीख से पहले राजभाषा अनुभाग में भेज दें।

3.) केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, खड़गपुर कारखाना की अगली बैठक 100 वीं बैठक होगी और इसके लिए हम काम करने के तरीकों को बदलकर आंकड़ों को सत्यता के करीब लाएं।

4.) आपके कार्यालय की ओर से जारी किए जाने वाले पत्रों के शीर्ष, विषय और हस्ताक्षर कत्र्ता का विवरण हिन्दी में भी या केवल हिन्दी में दें।

5.) सभी विभागीय सचिव गार्ड फाइलों को अपने शाखा अधिकारी को माह में एक बार अवश्य प्रस्तुत करें। यह सुनिशिचत किया गया है कि गार्ड फाइल के आधार पर ही केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, खड़गपुर कारखाना की अगली बैठक 100 वीं बैठक में किसी एक विभाग को उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। अतएव गार्ड फाइल में हिन्दी में किए गए कार्यों का नमूना अवश्य रखें।

6.) हर माह के अंतिम सप्ताह के मंगलवार को उत्तराद्र्ध में विभागीय सचिवों और राजभाषा अनुवादकों की बैठक राजभाषा अनुभाग में होगी।

7.) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में अनुवादकों को बुलाएं और सभी सचिव परस्पर एक दूसरे को भी बुलाएं। इससे एक दूसरे से सीखने की प्रेरणा मिलेगी।

8.) प्रत्येक मंगलवार को समस्त शाखा अधिकारी यह सुनिशिचत करें कि अपने विभाग/ कार्यालय/ अनुभाग/ शाप में ज्यादा से ज्यादा कार्य हिंदी में किए जाएं। प्रयास यह रहे कि शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में ही संपन्न किए जाएं।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया श्री वेदप्रकाश मिश्र, राजभाषा सहायक-।। ने।

प्रायश्चित

: **एम. भास्कर राव, कार्यालय अधीक्षक,**
मुख्य कार्य प्रबंधक कार्यालय, खड़गपुर कारखाना

समय बड़ा बलवान होता है। एकबार हाथ से निकल जाने के बाद उसे वापस लाना असंभव है। आज मनीष आपने आप को कोस रहा है, पर सुनने वाला कोई नहीं। बेटों को बुढ़ापे में माँ-बाप का सहारा बनना चाहिए, पर मैंने तो सहारा नहीं दिया बलिक उन्हें तड़पा-तड़पा कर मार डाला। शायद मेरे पाप का प्रायशिचत सात जन्मों के बाद भी नहीं होगा। शायद इसीलिए भगवान ने मेरे पापों का प्रतिफल इसी जन्म से देने शुरू कर दिया।

आज से लगभग 28 साल पहले की बात है। उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के एक छोटा सा गांव में देवकीनंदन जी निजी मकान एवं दस बीघा जमीन हुआ करता था। उन्होंने अपने इकलौते बेटे की पढ़ाई एवं उसके उज्ज्वल भविष्य बनाने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ा। यहाँ तक की अपनी दस बीघा जमीन तक बेच डाली। इसी का नतीजा है कि आज मनीष मुंबई के एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सफल इंजीनियर है और अपनी ही कंपनी के एक सह-इंजीनियर से विवाह भी अपने माँ-बाप को बोले बिना कर लिया और एक बच्चे का बाप भी बन गया। गांव में माँ और पिताजी किस हालत में हैं उससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। बेचारी माँ जिसकी ममता अपनी औलाद के लिए हर पल तरसती है, वह हमेशा उसे बुलाती और देखना चाहती है, पर बेटा आधुनिक परिवेश में आकर अपना संस्कार भूल गया है। वह अपनी पत्नी, बच्चे और नौकरी को छोड़कर आधुनिक परिवेश में अपना एक नया पहचान बना लिया और वहीं का हो गया। बेचारी माँ अपने बेटे की याद में जिसे वह पनी कोख से जन्म दिया, हर पल तड़प-तड़पकर उसकी याद में बीमार हो गई। बेचारा पिता अपनी पत्नी के इलाज में बचाखुचा सबकुछ खर्च कर दिया पर अपनी पत्नी को बचा नहीं सका। माँ की मृत्यु की खबर पाकर भी बेटा पनी माँ के अंतिम दर्शन करने नहीं आया। हाँ, उसका भेजा गया चेक जरूर पहुँचा।

देवकी नंदन जी पत्नी की मृत्यु के बाद लगभग टूट-सा गए। हर पल उन्हें अपनी पत्नी की मृत्यु की याद सताती है और उसकी तड़पती हुई ममता अपने बेटे के प्रति याद आता है तो वे अपने आपको रोक नहीं पाते। उन्हें न कुछ खाने या कुछ करने का मन होता है और न ही कुछ और। हर वक्त वे अपने आप में घुटते रहते हैं। ऐसी ही सिथति में एक दिन सड़क पार करते-करते हाई-वे पर एक ट्रक के नीचे आ गए और दम तोड़कर इस दुनिया से चल बसे। देवकी नंदन जी का मृत देह का पोस्टमार्टम हुआ और उसके बाद उनके बेटे मनीष के साथ संपर्क स्थापित किया गया, पर मनीष भारत से बाहर कंपनी के किसी काम से गया हुआ था। उनके मृत देह को पौरसभा वाले अपने नियमानुसार उनका अंतिम संस्कार कर दिया।

क्या बेटों को जन्म देने वाले हर माँ-बाप की ज़िन्दगी में सिर्फ त्याग, घुटन, नफरत, दु:ख आदि को झेल कर अंतिम सांस लेना है ? आखिर क्यों ? अगर ऐसी ही बात है तो फिर माँ-बाप को अपनी संतानों के प्रति आकांक्षा नहीं रखनी चाहिए और ना ही उन्हें जन्म देना चाहिए। भले ही मृत्यु के बाद माँ-बाप की आत्मा को मुकित मिले या न मिले। औलाद को जन्म न देना ही बेहतर होगा पर क्या हम ऐसा कर सकेंगे। शाद कभी नहीं।

मनीष के भारत लौटते ही उसे पता चला कि उसके बीमार पिताजी की मृत्यु उसकी माँ की मृत्यु के सदमे के कारण सड़क दुर्घटना में हुई। उनका ंतिम संस्कार भी कर दिया गया तो हठात उसका सिर घूम गया। अब उसे रोने-गिड़गिड़ाने के लिए माँ-बाप का साया भी उठ गया। इसी शाक से वह अपने मकान पहुँचा पर वहाँ भी उसे कोई नहीं मिला। मकान में ताला लगा हुआ था ओश्र पड़ोस वालों से पता चला कि उसके पांच साल के बच्चे को अचानक सांस लेने में परेशानी होने की वजह से उसकी पत्नी उसे मुंबई के लीलावती अस्पताल में भर्ती करने ले गई है। उसे अपने पति को खबर देने तक का मौका नहीं मिला। अस्पताल पहुँचते ही मनीष ने देखा-उसके बेटे को आइ.सी.यू. में रखा गया है और मुंबई के जाने-माने डाक्टरों द्वारा उसका इलाज चल रहा है और पति-पत्नी दोनों नि:सहाय बाहर से पने बेटे को देख रहे थे। रात भर उसे आइ.सी.यू. में ही रखा गया। डाक्टरों ने उसे 72 घंटे का समय दिया और कहा कि 72 घंटे के बाद ही कुछ कहा जा सकता है। मनीष की पत्नी आइ.सी.यू. के बाहर सिसक रही थी और मनीष उसे दिलासा दे रहा था कि उसके बेटे को कुछ नहीं होगा। सबकुछ ठीक-ठाक हो जाएगा पर 72 घंटे के बाद ऐसा कुछ नहीं हुआ। उसके बेटे की âदय-गति रूक जाने की वजह से मृत्यु हो गई।

परिसिथति एवं कालनिर्णय को कोई नहीं टाल सकता। हम चाहे जितना भी प्रयास कर लें। आज मनीष और उसकी पत्नी के साथ वही हुआ। पुत्र शोक में दोनों टूटते जा रहे थे।

@@@@@@

खड़गपुर कारखाने के दो कवियों की कविताएं

व्यथा

पी. शिवशंकर दास

काँप रहा अलाव
ठिठुर रही हैं लपटे ं
करती है प्रहार
जिस्म के चिथड़ो पर
अनवरत निष्ठुर
शीत लहरी के कोड़े ।

गुजरेगी आज भी
हाड़ थर्राती रात
कल हो कदाचित
ज़िन्दगी की नयी
इक शुरूआत
दौड़े हैं अवास्तविक घोड़े।

रात के अनितम प्रहर
हिंस्र पंजो से पूस की
लग गई सेंध
उजड़ गई असहाय कोख
बिखर गई फिर
ममता की कोशिश
अन्र्तनाद के बीच
रिस रहे हैं अविराम
मवाद भरे व्यथा के फोड़े।

@@@@

वेद प्रकाश मिश्र की व्यंग्य-विनोद से ओतप्रोत दो कविताएं

।।एक।।

वह जो मंच से
भेड़ बकरियों को
हुर्र-हुर्र कर रहा है
जानता है -
ये जानवर
भी जानते हैं कि
उनके हिस्से का
बहुत कुछ उसने खाया है
लेकिन उसे विश्वास है
कि कुछ भेड़ें
और कुछ बकरियां
उसके पीछे आ ही जाएंगी।
इसलिए -
वह नए रंगों के
चारे दिखा रहा है
विसिमत, ... भेड़-बकरियों को !

@@@@

।।दो।।

वह दलित था
आरक्षित सीटों पर
जीत-जीतकर
लोकतंत्री मंत्र से
वह निकल गया
सवर्णों से भी आगे
बहुत आगे
वह भी वायदे करने लगा
दलितों के उत्थान के
पहले भी करते आया था
दलितों की पक्की बसितयां
बसाने की बजाय
पक्के बुत बनवाने लगा स्वयं के
दलितों से ऊपर हो गया वह
और आज !
वह भी दलन करने लगा
दलित था वह !

@@@@